IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पुरातत्व विभाग द्वारा उपेक्षित मिथिला के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल।

डॉ0 अलका कुमारी,
इतिहास विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कमेश्वरनगर, दरभंगा।

विदेहजन द्वारा स्थापित मिथिला का प्रारंभ से ही भारतीय इतिहास में अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है। वेद, उपनिषद, रामायण, भागवतगीता, पुराण, महाभारत आदि पौराणिक ग्रन्थों एवं विविघ भाषा के मानक ग्रन्थों के वर्णनानुसार मिथिला विद्या, उपासना एवं अघ्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रहा है। परंतु हमारा यह दुर्भाग्य है कि हम आज भी मिथिला के इतिहास एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने से वंचित है। यह कहना अप्रांसगिक नहीं होगा कि इतिहासविदों के प्रयत्नों के बावजूद आज भी मिथिला के अतीत की छवि धुधली और अधूरी है। इसके इतिहास का अधिकांश भाग अंधकारमय है और उससे जुड़े अनेक प्रश्न अनुतरित है। पुरातत्व अगर चाहे तो ऐसे अनुतरित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकता है।

भौगोलिक संरचनाजनित अभिशाप के कारण मिथिला को आग, पानी और भूकम्प के प्राकृतिक प्रकोपों के समक्ष बार–बार नतमस्तक होना पड़ा है। अतः मिथिला का इतिहास निर्माण और विघ्वंश तथा पुननिर्माण और पुनर्विध्वंश की अनवरत प्रक्रिया है। यही कारण है कि मिथिला में ऐसे डीहों, टीलों और प्राचीन स्थलों के अवशेषों की भरमार है, जिसके गर्भ में इतिहास के अनगिनत पृष्ट समाये हुए है। यदि योजनाबद्ध तरीके से इन पुराने टीलों और डीहों का पुरातात्विक अत्खनन किया जाय तो न केवल इतिहास के विरासतो का अनावरण हो सकेगा, अपितु कई ऐसे पर्यटनस्थल भी विकसित हो सकेंगे, जिनमें दुनियाँ के इतिहासकारों पुरातत्वविदों और पर्यटको को आकर्षित करने की अपार क्षमता होगी। परन्तु विडंबना यह है कि समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण मिथिला के ये अंसख्य ऐतिहासिक स्थल पुरातत्व विभाग एवं इतिहासविदों की कृपा से उपेक्षित पड़े है।

मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र मिथिला के विखड़े पड़े पुरास्थलों की ओर पुरातत्व विभाग का ध्यान आकर्षित करने का छोटा सा प्रयास मात्र है, ताकि समृद्धशाली मिथिला के इतिहास में अतीत के गर्भ में छिपे कई और सुनहरे आघ्याय जुड़ सके।

पुरातत्व विभाग द्वारा उपेक्षित मिथिला के प्रमुख इतिहासिक स्थलों में उच्चैठ, बलिराजपुर, देकुली, अलौलीगढ़, नौलागढ़, जायमंगलागढ़, कटरा आदि उल्लेखनिय है।

उच्चौठ :– मिथिला के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में सम्मलित उच्चैठ की ख्याति मिथिला में ही नहीं बल्कि अन्य सुदूरवर्ती प्रदेशों में प्राचीन काल से ही रही है। मधुबनी जिले मे बेनीपट्टी थाने के अन्तर्गत्त उच्चैठ ग्राम है, जहाँ देवी भगवती का एक प्रचीन मंदिर है, जिसमें देवी की कृष्ण–प्रस्तर कलापूर्ण अत्यन्त मनोरम मूर्ति सुशोभित है। मंदिर से पूर्व की ओर कालीदास डीह के नाम से प्रसिद्ध ढूह तथा कमला नदी की धारा है। नदी के तट पर प्राचीन मंदिर का ध्वंसावशेष अब भी दृष्टिगत होता है।

कहा जाता है कि कवि कालिदास का अविर्भाव मिथिला के उसी अंचल में हुआ था, जहाँ उच्चैठ भगवती का मंदिर है। अपनी परमपंडिता पत्नी द्वारा अपमानित होने पर उन्होंने इसी मंदिर में शरण ली थी और माता की कृपा प्राप्त कर विश्वविख्यात विद्वान बन गये। कविवर कालिदास ने अध्ययन एवं विद्या प्राप्ति मिथिला में की थी। परंतु कविवर कालिदास के कालनिर्णय के संबंध में विद्वानों का विचार एक समान नहीं है। अनेक विद्वान उन्हें गुप्त युग के विक्रमादित्य की राजसभा के देहीप्यमान रत्न बताते है तो कुछ विद्वान उज्जयिनी, बंगाल, कश्मीर और मिथिला के अधिवासी होने का अनुमान करते हैं।

यह एक विचारणीय विषय है, जिसके विश्लेषण एवं समुचित समीक्षा कर इतिहास के विद्वानों को असली तथ्य का पता लगाना एवं अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचना आवश्यक है। अंग्रेजी कवि शेक्सपियर के निवास स्थान की प्राचीन झोपड़ियों का अवशेष वहॉ के साहित्यसेवियों का आज भी तीर्थ स्थान बना हुआ है, परन्तु कालिदास के निवास स्थान का वास्तविक रूप से पता लगा कर उसके विषय में अंतिम निर्णय देने में भारत के विद्वान अक्षम रहे है।

बलिराजपुर :– मधुबनी अनुमंडल के बाबूबरही ग्राम के निकट खजौली थाने में बलिराजपुर नामक स्थान है। राजा बलि द्वारा मिथिला में राज करने की चर्चा तिरहुत की स्थानीय जनता में अति प्राचीन काल से चली आ रही है, परन्तु राजा बलि के संबंध में जानकारी का अभाव है। बलिराजपुर में एक देवालय एवं मठ है। उक्त मठ से दक्षिण राजा बलि के प्राचीन गढ़ का भग्नावशेष खण्डहर है। जनश्रुति के अनुसार पांडवों ने अज्ञातवास के कुछ दिन इस अंचल में छिपकर बिताये थे।

विदेशी विद्वान बुकानन ने अपने दिनाजपुर रिपोर्ट में बलि के दिनाजपुर अंचल में शासन करने का उल्लेख किया है। आधुनिक विद्वान इसका निर्माण काल ईसा–पूर्व द्वितीय शताब्दी मानते है। यद्यपि इसकी खुदाई पुरातत्व विभाग की ओर से करा कर इसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

देकुली :– मुजफ्फरपुर जिले (वर्त्तमान में सितामढ़ी जिला) के सीतामढ़ी अवर प्रमण्डल मे पुनौराधाम से लगभग 13 मील दूर शिवहर से दो मील पूरब सीतामढ़ी–शिवहर राजपथ से सटे देकुली के प्राचीन गढ़ का भग्नावशेष है। गढ़ चारों ओर खाई से धिरा हुआ है। उसी प्राचीन गढ़ के उपर भगवान शिव और भैरव के मन्दिर है। उस गढ़ के आस–पास लोग 52 पोखरों का अस्तित्व बताते है ऐसा जनविश्वास है कि द्रौपदी–स्वयंवर के अवसर पर उपस्थिति राजाओ आवास उन्हीं भिन्न–भिन्न पोखरों के तट पर थे।

शिव मंदिर वाले गढ़ से सटा एक दूसरा गढ़ है। राजा द्रुपद के गढ़ का ध्वसावशेष बताया जाता है। परन्तु लोगों की यह कल्पना केवल प्रचलित जनश्रुति पर आधारित है। देकुली के टीले को राजा द्रुपद का गढ़ स्वीकार कर लेना बुद्धि एवं तर्क गम्य नहीं है, क्योकि जनश्रुतियाँ हमेशा सत्य सिद्य हो ऐसा सम्भव नहीं। पुरात्व विभाग द्वारा गढ़ की खुदाई यदि करायी जाय तो उससे उसके इतिहास पर प्रकाश पड़ना बहुत अंशो तक सम्भव हो सकता है।

नौलागढ़ :– बेगूसराय जिला से 16 मील उत्तर नौलागढ़ के प्राचीन विशाल दुर्ग का ध्वंसावशेष खण्डहर दृष्टिगत होता है। दुर्ग की लम्बाई,चौडाई और ठुहो की प्रचुरता उसके अतीत के गौरव एवं ऐश्वर्य का धोत्तक है।

नौलागढ़ किले का क्षेत्रफल लगभग 350 ऐकड़ बताया जाता है। किले के अन्दर उत्तर–पश्चिम दिशा में एक उच्च एवं विशाल ढूह है। सम्भवतः प्राचीन काल में वहाँ राजप्रसाद रहा होगा, जिसका वह ध्वंसावशेष प्रतीत होता है। इसके आलावा और भी अनेक छोटे–छोटे ढूहों के समूह है, जो राजमहल से सम्बन्धित भवनों के अवशेष जान पड़ते है।

नौलागढ़ की उपलब्धियों में पाल–काल के उत्कीर्ण दो अभिलेख एवं ताम्र तथा स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए है। साथ ही खण्डहर से क्षुद्रकलश, प्याला कतिपय पत्थर के आभूषण के टूकड़े एवं चमकीले एम0बी0 (मौर्य बिहार पौटरी) के खण्ड़ प्राप्त हुए है।

परन्तु पुरातत्व विभाग की ओर से खण्डहरों की खुदाई होने पर नौलागढ़ क प्राचीन अतीत के गर्भ में छिपे इतिहास का अध्ययन संभव हो सकता है।

जयमंगलागढ :– बेगूसराय जिले में ही अवस्थित एक विशाल गढ़ का मग्नावशेष बड़े टीले के रूप में खडा होकर लोगों को अपना इतिहास बता रहा है। इस गढ़ का क्षेत्रफल 352 बीघा है, तथा इसका सम्बन्ध नौलागढ़ से जल मार्ग के द्वारा था, ऐसा लगता है। वहाँ उस खण्डहर के उपर एक देवी का मन्दिर है। मन्दिर में स्थापित भगवती की सुन्दर एवं कला पूर्ण लगभग ढ़ाई फीट उँची मूर्ति एक स्तन विहीना मालूम पड़ती है। जयमंगलागढ़ से उत्तर लगभग 1 मील की दूरी पर छाटे–छाटे अनेक ढूहो के समूह बिखरे है। कुछ विद्वान इस गढ़ को नौला गढ़ द्वारा स्थापित देव स्थान मानते है, परन्तु इसमें सन्देह है, क्योकि मंदिर का निर्माण ढूह की उँचाई पर है, जिससे वह स्पष्टतः पश्चाद्वर्ती निर्माण सिद्ध होता है। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार जयमंगलागढ़ का संस्थापक जयसिंह नामक शासक था।

अलौलीगढ़ :– बेगूसराय जिले में ही अलौलीगढ़ का खण्डहर है। यह स्थान खगड़िया नगर से लगभग 12 मील उत्तर है। गढ़ का क्षेत्रफल लगभग 100 बीघा बताया जाता है। दीवारों में लगी ईटों का आकार जलमंगलागढ़ से प्राप्त ईटों से बडा है। दुर्ग क्षेत्र में दो पुष्करिणी है। इसका इतिहास भी अतीत के गर्भ में छिपा पड़ा है।

कटरा :– कटरा मुजफ्फरपुर जिले का एक थाना है। कटरा में देकुली के समान ही एक विशाल गढ़ का ध्वंसावशेष है, जो चारो तहफ से खाई से धिरा है। खाई की गहराई लगभग समाप्त हो चुकी है, परन्तु उसका अवशिष्ट अवशेष अब भी दृष्टिगत होता है, परन्तु वह गढ़ किसका था और

कब बना इसकी जानकारी इतिहास को नही है। गढ़ खण्डहर का क्षेत्रफल लगभग 84 बीघा है। वहाँ पर चामण्डा देवी का प्राचीन मंदिर है। कटरागढ़ के खण्डहर से 1 मील दक्षिण एक और टीला है जिसका वर्त्तमान क्षेत्रफल 10बीघा है। वहाँ से बड़े आकार की ईटों की प्राप्ति हुई है। टीले के दक्षिण भाग में चन्द्रेश्वरनाथ महादेव का प्राचीन मंदिर है। उपर्युक्त मंदिर के सामने एक प्राचीन पुष्पकरिणी है। उसी स्थान से मिट्टी काटते समय दो पुराकालिक मूर्तियाँ प्राप्त हुई थी। वे मूर्तियाँ उस गॉव के निवासी जगन्नाथ प्रसाद सिंह के पास संग्रहीत एवं सुरक्षित है।

अतः कटरा के गढ़ का अस्तित्व अति प्राचीन ज्ञात होता है जिसकी खुदाई से अनेक प्राचीन रहस्यों का उद्‌भेदन संभव है।

पुरातत्व विभाग द्वारा उपेक्षित मिथिला के उपर्युक्त ऐतिहासिक स्थलों में शामिल खंडहर, डीह एवं टीले अपने विगत गौरवशाली अतीत की कहानी बया कर रही है। पुरातात्विक उपेक्षा के कारण ही अतीत के इतिहास को सुनाने वाले न जाने ऐसे कितने ही ऐतिहासिक स्थल भौगोलिक विषमता का दंश झेलते हुए काल के गर्भ में समा गए। यदि अब भी पुरातत्व विभाग का ध्यान इस ओर नहीं गया तो यह शेष बचा अवेशष भी सदा के लिए विनिष्ट हो जायेगा।

अपने इस शोध पत्र में मैने मिथिला के कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों का ही उल्लेख किया है। परंतु इनके आलावा भी मिथिला के भूगर्भ में अनगिणत बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर छिपे पड़े है, जिसके अनावरण से मिथिला के इतिहास में अनेक नए गौरवशाली अध्यायों की जुड़ने की पुरी सम्भावना है। केवल आवश्यकता है मिथिला के पुरातात्विक ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों को चिन्हित कर अनेक अत्खनन, अनावरण एवं संरक्षण की कारगर व्यवस्था की जाय।

संदर्भ :–

- राम प्रकाश शर्मा, **मिथिला का इतिहास**, दरभंगा,2002, पृ0–48–49, 453,465–471
- धर्मेन्द्र कुमार, **मिथिला मिसलेनी**, दिसम्बर,2005, पृ0 83–84
- उपेन्द्र ठाकुर, **बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म इन मिथिला**, वाराणसी,1964, पृ0–13–18
- बी0पी0सिन्हा, **आरकियोलॉजी इन बिहार**, पटना,1988, पृ0–20